खजुराहो के जावरी मंदिर की विष्णु-प्रतिमा का सिर मिला, ASI जोड़ेगी

संस्कृति और धरोहर | समाचार संदर्भ: 13 अक्टूबर 2026 (टाइम्स ऑफ इंडिया, ASI महानिदेशक का साक्षात्कार) | प्रकाशित: 23 अक्टूबर 2026

खबरों में क्यों

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के महानिदेशक यदुबीर सिंह रावत ने बताया कि खजुराहो के जावरी मंदिर की 11वीं सदी की सात फ़ीट ऊँची विष्णु-प्रतिमा का खोया हुआ सिर ASI के भंडार में मिल गया है; विशेषज्ञ-परीक्षा के बाद इसे प्रतिमा से फिर जोड़ा जाएगा (समाचार-विवरण के अनुसार पुनर्स्थापना नवंबर तक संभावित)। रावत के अनुसार संभव है कि सिर चुराने के प्रयास में तोड़ा गया था, पर प्रयास असफल रहा। यह मामला पिछले वर्ष सुप्रीम कोर्ट तक पहुँचा था, जहाँ प्रतिमा के जीर्णोद्धार की याचिका खारिज हो गई थी।

खजुराहो और जावरी मंदिर

- मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले का खजुराहो चंदेल शासकों (मुख्यतः 950-1050 ई.) का मंदिर-समूह है, नागर शैली की वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध (सामान्य पृष्ठभूमि)।
- यहाँ मूल रूप से कई दर्जन मंदिर थे, जिनमें से लगभग 20-23 बचे हैं और पश्चिमी, पूर्वी व दक्षिणी समूहों में बँटे हैं; 1986 में यूनेस्को विश्व-धरोहर सूची में शामिल हुआ (सामान्य पृष्ठभूमि)।
- जावरी मंदिर इसी समूह का हिस्सा है; उसकी विष्णु-प्रतिमा का सिर लंबे समय से लापता था।

संदर्भ और विस्तृत व्याख्या

जावरी मंदिर की प्रतिमा-पुनर्स्थापना को खजुराहो की कलात्मक परंपरा में देखना उचित है। चंदेल शासकों (मुख्यतः 950-1050 ई.) ने यहाँ नागर शैली के मंदिर बनवाए — इस शैली की पहचान ऊँचे वक्राकार शिखर, विस्तृत नक्काशी और मंच पर स्थापित गर्भगृह से होती है। मूल समूह में कई दर्जन मंदिर थे; आज 20-23 बचे हैं और पश्चिमी, पूर्वी व दक्षिणी समूहों में बँटे हैं — पश्चिमी समूह में कंदारिया महादेव और लक्ष्मण मंदिर जैसे प्रमुख मंदिर आते हैं। 1986 में यूनेस्को विश्व-धरोहर सूची में शामिल होने से इनका अंतरराष्ट्रीय संरक्षण-मान्यता मिली। ASI की भूमिका ऐसे संरक्षित स्मारकों के रखरखाव, जीर्णोद्धार और पुरातात्विक अभिलेखण की होती है। किसी प्रतिमा के खोए अंग को पुनः जोड़ने से पहले विशेषज्ञ-परीक्षा इसलिए आवश्यक है, ताकि पत्थर की सामग्री, नक्काशी-शैली और काल की पुष्टि हो सके और पुनर्स्थापना वैज्ञानिक ढंग से हो। सुप्रीम कोर्ट में याचिका खारिज होने और ASI के भंडार में सिर मिलने की घटना-क्रम से यह भी स्पष्ट होता है कि धरोहर-प्रकरणों में कानूनी और पुरातात्विक दोनों पक्ष साथ चलते हैं।

परीक्षा की दृष्टि से

PCSMANTRA.COM

जावरी मंदिर और ASI की भूमिका, चंदेल-काल (950-1050 ई.), नागर-शैली, यूनेस्को सूची-वर्ष 1986 — प्रिलिम्स संस्कृति-तथ्य; धरोहर-संरक्षण और प्रतिमा-पुनर्स्थापना पर मेन्स-नोट।

स्रोत और सीमाएँ

- टाइम्स ऑफ इंडिया, 13 अक्टूबर 2026 (पढ़ा): TOI: ASI चीफ का साक्षात्कार
- **सीमाएँ:** तथ्य ASI महानिदेशक के साक्षात्कार-उद्धरण पर आधारित; ASI का अलग कार्यालयी विज्ञप्ति-पृष्ठ नहीं मिला। मंदिर-इतिहास सामान्य पृष्ठभूमि के रूप में अंकित। समाचार-संदर्भ 13 अक्टूबर का है, पुनः-प्रकाशन नहीं — यह 23 अक्टूबर को तैयार संदर्भ-लेख है।

PCSMANTRA.COM